18. शर्मा, अरविंद, पूर्वोक्त, पृ. 7.
19. वर्मा, भगवान सिंह, छत्तीसगढ़ का इतिहास, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, बानगंगा, भोपाल, म.प्र., 2001, पृ. 27.
20. अमरोहित, गीतेश, छत्तीसगढ़ का इतिहास, सरस्वती बुक्स, भिलाई, दुर्ग, 2022, पृ. 20-21.
21. गुप्त, मदनलाल, पूर्वोक्त, पृ. 272.
22. बेहार, रामकुमार, छत्तीसगढ़ का इतिहास, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर,छ.ग.,2009, पृ. 93.
23. शुक्ल, अशोक, छत्तीसगढ़ का राजनैतिक इतिहास एवं राष्ट्रीय आंदोलन, युगबोध, सदरबाजार, रायपुर, पृ. 12.
24. मिश्र, रमेन्द्रनाथ एव झा, लक्ष्मीधर, छत्तीसगढ़ का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, सेन्ट्रल बुक हाउस,
सदर बाजार, रायपुर, 1998, पृ. 178, 182.
25. त्रिवेदी, सुशील, युग-युगीन छत्तीसगढ़, वैभव प्रकाशन, अमीनपारा चौक, पुरानीबस्ती, रायपुर, छ.ग., 2016, पृ. 76.
26. गुप्त, प्यारेलाल, पूर्वोक्त, पृ. 162.
27. वर्मा, एल. एन., छत्तीसगढ़ भौगोलिक अध्ययन, छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, छ.ग.,2018, पृ. 259.
28. शुक्ल, हीरालाल, छत्तीसगढ़ ज्ञानकोष, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, म.प्र., 2003, पृ. 320.
29. अलंग, संजय, पूर्वोक्त, पृ. 128.
30. वर्मा, एल. एन., पूर्वोक्त, पृ. 258.
31. शुक्ला, सुरेश चंद्र एवं शुक्ला, अर्चना, शिक्षादूत ग्रन्थागार प्रकाशन, समता कॉलोनी, रायपुर, 2003, पृ. 230.
32. गुप्त, प्यारेलाल, पूर्वोक्त, पृ. 163.
33. अमरोहित, गीतेश, छत्तीसगढ़ कला एवं संस्कृति,सरस्वती बुक्स, भिलाई, दुर्ग, छ.ग., 2021, पृ. 269.
34. मिश्र, रमेन्द्रनाथ एवं झा, लक्ष्मीधर, पूर्वोक्त, पृ. 41.
35. त्रिवेदी, सुशील, पूर्वोक्त, पृ. 66.
36. मिश्र, रमेन्द्रनाथ एवं झा, लक्ष्मीधर, पूर्वोक्त, पृ. 16.
37. त्रिवेदी, सुशील, पूर्वोक्त, पृ. 170-172.
38. अग्रवाल, किशोर कुमार, लेख, सृष्टि के पूर्व का तीर्थ राजिम, संपादक- पटनायक,अशोक कुमार, खुटे,डी.एन., एवं नुरूटी, बंशो, रिविजिटिंग हिस्ट्री, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली, 2023, पृ. 231.

# झारखंड आंदोलन के अधूरे सपने...

**कनक राज पाठक**
शोधार्थी
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची, झारखण्ड।

सैकड़ों बार आंदोलन, दर्जनों गोली कांड में हजारों लोगों की शहादत और लंबे उतार-चढ़ाव के बाद अंततः 14 नवंबर 2000 को झारखंड राज्य अस्तित्व में आया. राजनैतिक उथल-पुथल के बीच 14-15 नवंबर की आधी रात को बाबूलाल मरांडी ने प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली. झारखंड को सींचने संवारने में सिदो-कानो, चांद-भैरव, नीलांबर-पीतांबर, बिरसा मुंडा, जयपाल सिंह मुंडा सरीखे सैकड़ों लोगों ने अपना योगदान दिया है. जैसा हम जानते हैं कि झारखंड की पहचान आदिवासी, कला और संस्कृति है. झारखंड को सींचने-संवारने और इस इसे पल्लवित-पुष्पित करने में यहां के संस्कृतिकर्मी, आंदोलनकारी और बुद्धिजीवियों समेत समाज के सभी वर्गों का हाथ है. झारखंड की कला, सभ्यता और संस्कृति दूसरे राज्यों से अलग है. प्रचीन काल से ही यहां के लोगों में अबुआ दिसूम अबुआ राज (अपना देश- अपना राज) की चाहत थी. इस झारखंडी स्वराज का सपना भगवान बिरसा मुंडा ने देखा था. महाजनी लूट के खिलाफ अंग्रेजों, सूदखोरों, दिकुओं और महाजनों से यहां के लोगों ने लंबी लड़ाई लड़ी हैं. 1912 में पश्चिम बंगाल से बिहार के बंटवारे के बाद अलग झारखंड की मांग और जोर पकड़ती चली गई. सन 1935 में बिहार और उड़ीसा से बंटवारे के बाद अलग झारखंड राज्य की मांग और तेज हो गई. अब इस मांग की अनुगूंज ऱाष्ट्रीय फलक पर सुनाई देने लगी. गाहे-बगाहे इस मांग को कभी हवा दी जाती थी तो कभी दबा दिया जाता था. इस स्थिति को देखते हुए मरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा को कहना पड़ा कि “बिहार प्रेस जहां एक तरफ आदिवासी महासभा के समाचारों को दबा देता है, वहीं सनातन आदिवासी सभा के समाचारों को न केवल अनावश्यक महत्व देता है, बल्कि अपनी ओर से समाचार गढ़ लेता है”. यह वक्तव्य जयपाल सिंह मुंडा ने जुलाई 1939 में दिया. प्रभात खबर के वरिष्ठ पत्रकार अनुज कुमार सिन्हा अपनी पुस्तक “झारखंड आंदोलन का दस्तावेज” में लिखते हैं कि 30-40 साल पहले पत्रकारिता अलग थी. वैसे भी झारखंड आंदोलन की खबरों को अखबार में कम जगह मिलती थी. इसलिए पुलिस गोलीकांड या अन्य जुल्म की रिपोर्ट अखबारों में कम ही दिखती थी. राज्य के कई हिस्सों में अखबार तो निकलते थे, लेकिन उसमें झारखंड आंदोलन की खबरें कम छपती थी. एक दो छोटे अखबार थे जो, जिन्होंने इस मामले को जिंदा रखा था. मीडिया ने भी 1970-80 के दौर में झारखंड आंदोलन की खबरों के साथ न्याय नहीं किया. यही कारण है कि राज्य का एक बड़ा हिस्सा यह जान नहीं पाया कि आंदोलन के दौरान क्या-क्या हुआ था. अभी भी हालात बहुत नहीं बदले हैं. लोगों को इस संबंध में बहुत कम जानकारी है.

“झारखंड की समर गाथा” पुस्तक के लेखक, आंदोलनकारी और जमशेदपुर लोकसभा क्षेत्र के पूर्व सांसद शैलेंद्र महतो का कहना है कि झारखंड के मुद्दे पर पत्रकारों और मीडिया मालिकों का रुख शुरू-शुरू में उदासीन था. धीरे-धीरे वह उपहास और कट्टर विरोध में बदल गया. एक लंबा कालखंड गुजरने के बाद पत्रकार-बंधु और मीडिया मालिक पक्ष में आने लगे. वह कहते हैं कि उन दिनों के तमाम पत्रकारों का हार्दिक अभिनंदन है, जिनकी कलम से निकले शब्दों ने अंततः झारखंड निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. कई बार प्रजातंत्र के दो स्तंभ

विधायिका और कार्यपालिका झारखंड के विषय में डगमाते रहे, वहीं तीसरे स्तंभ न्यायपालिका को राज्य निर्माण से कोई सरोकार नहीं था, किंतु चौथे स्तंभ के रूप में मीडिया भी अपनी निष्पक्षता और निर्भीकता दिखा पाने का साहस जुटा नहीं पाया. मीडिया में भी बिहार, बंगाल और उड़ीसा के बंटने का डर समाया हुआ था. शैलेंद्र महतो लिखते हैं रांची से प्रकाशित साप्ताहिक झारखंड टाइम्स (संपादक एनई होरो और उप संपादक सुलेमान बडिंग) ने झारखंड आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. चाईबासा से प्रकाशित "सिंहभूम एकता" नामक पत्रिका ने झारखंड आंदोलन में जो भूमिका निभाई, वह अविस्मरणीय और अनिवर्चनीय है. झारखंड आंदोलन में हर छोटी-बड़ी घटना के विषय में सूचना और समाचार के अलावा झारखंडी जनता को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक शोषण के प्रति सचेत, जागरुक और आंदोलित करने करने में अहम भूमिका निभाने वाले सिंहभूम एकता को झारखंड आंदोलन की एक अग्रणी पत्रिका की संज्ञा दी जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी. पत्रिका के प्रकाशक समूह में मुख्यरूप से एलोसिस राज, ज्योत्सना, जेवियर डायस और संपादक अजय कुमार मित्रा थे, वे सभी सरकारी दोष, दमन और प्रताड़ना के पात्र बने. दिनांक 8 सितंबर 1980 को गुवा गोलीकांड के बाद इनलोगों पर झारखंड आंदोलन को भड़काने का आरोप लगाते हुए इन्हें गिरफ्तार कर हजारीबाग जेल भेज दिया गया. सरकार के अलोकतांत्रिक एवं दमनकारी प्रयासों के बावजूद निर्भीकता से पत्रकारिता के धर्म को निर्वहन करते हुए बिना सहमे, बिना डरे अपने विचारों की अभिव्यक्ति सिंहभूम एकता के माध्यम से करते रहे. झारखंड के संबंध में लिखने वाले पत्रकारों की संख्या बहुत कम थी. आंदोलन के इतिहास, प्रासंगिकता और न्याय संगतता को प्रचारित करने वालो में एमजे अकबर, उत्तम सेनगुप्ता, हेराल्ड एस तोपनो, फैसल अनुराग, अनुज कुमार सिन्हा, प्रबल कुमार महतो और सुनील कुमार बनर्जी प्रमुख थे और आंदोलन समाचार संकलन में डॉ वीपी शरण, शफीक अंसारी, पूरनचंद, सोनाली दास, दिलीप श्रीवास्तव – नीलू, वासवी कीड़ो, स्व रवींद्र कुमार सिंह, राजीव चोपड़ा, गिरजा शंकर ओझा, प्रभात कुमार, कवि कुमार, दिनेश्वर प्रसाद सिंह, एनके सिंह, विनोद शरण, संजीव भारद्वाज, श्रीचंद, किसलय जैसे नाम उल्लेखनीय है. मुंबई से प्रकाशित तत्कालीन राष्ट्रीय साप्ताहिक ब्लिट्ज में पहली बार 3 जनवरी 1981 को सीताराम शास्त्री का झारखंड राज्य के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक लेख प्रकाशित हुआ. इसी तरह राष्ट्रीय स्तर पर झारखंड की राजनीतिक समस्या का सम्यक विश्लेषण करने और उस पर निष्पक्ष टिप्पणी लिखने का श्रेय हरिवंश (प्रभात खबर के पूर्व संपादक और वर्तमान में राज्यसभा के उपसभापति) को जाता है. उन्होंने कलकत्ता से प्रकाशित रविवार में 1987 में झारखंड के विषय में राष्ट्रीय पाठकों को जानकारी दी.वहीं, बीबीसी बर्ल्ड सर्विस पर झारखंड आंदोलन और इस क्षेत्र के आदिवासियों की समस्याओं पर पहली बार 25 सितंबर 1989 को एक लंबी भेंटवार्ता प्रसारित की गई. हिन्दी सर्विस के प्रसारण कर्ता धीरंजन मालवे द्वारा दैनिक रांची एक्सप्रेस के संपादक बलबीर दत्त से बुश हाउस लंदन स्थित बीबीसी स्टुडियो में ली गई इस भेंटवार्ता का प्रसारण काफी चर्चित हुआ. इस साक्षात्कार के उद्धरण रांची एक्सप्रेस में प्रकाशित किए गए थे.वरिष्ठ पत्रकार बलबीर दत्त अपनी पुस्तक "कहानी झारखंड आंदोलन की", में लिखते हैं कि उन दिनों दैनिक प्रभात खबर में मेरा साप्ताहिक स्तंभ नीर-क्षीर छप रहा था. पत्र के प्रधान संपादक हरिवंश जी से बातचीत के बाद यह निर्णय हुआ कि इसी स्तंभ में झारखंड आंदोलन का विवरण "धारावाहिक लेखमाला" के रूप में प्रस्तुत किया जाए. मेरा विचार था कि 15-20 आलेख काफी होंगे और 15 नवंबर 2000 को झारखंड स्थापना के आसपास इस लेखमाला का उपसंहार कर दिया जाए. इसलिए एक पत्रकार के रूप में मैंने जो ठीक समझा लिखना आरंभ कर दिया. इस लेखमाला के पहले लेख में नेहरू ने कहा, "झारखंड" भीड़ ने कहा "झा.....र.....खंड" का बड़ा जोरदार स्वागत हुआ.(प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, 2 जनवरी 1952, मोरहाबादी मैदान रांची, ) अनेक लोगों ने कहा इस शैली में विस्तारपूर्वक लिखिए. लिखते-लिखते 127 लेख हो गए. इस लेखमाला के 83 लेख प्रभात खबर में छपे. बाकी 44 लेख रांची एक्सप्रेस में छपे. यह लेखमाला वर्ष 2002 में समाप्त हुई. मैंने 1950 में झारखंड पार्टी की स्थापना के बाद पहले आम चुनाव से झारखंड राज्य की स्थापना तक के कालखंड को, जिसका मैं प्रत्यक्षदर्शी था, इस लेखमाला में शामिल किया. वरिष्ठ पत्रकार और कहानी झारखण्ड आंदोलन की के लेखक बलबीर दत्त ने अपनी पुस्तक में झारखण्ड आंदोलन के इतिहास को छह काल खण्डों में विभाजित किया है। 1938 से 1949 के काल को विकास काल, 1950 से 1962 के काल को शिखर काल, 1963 से 1970 के समय को विभाजन एवं विग्रह काल, 1971 से 1986 तक के इतिहास को नव चेतना काल, 1987 से 1996 तक के समय को विस्तार काल एवं 1997 से 2000 तक के काल को परिपाक काल के रूप में विभक्त किया है।

डॉ अम्बेडकर ने खिंची थी अलग झारखण्ड की

झारखण्ड आंदोलनकारी एवं पूर्व सांसद शैलेन्द्र महतो अपनी पुस्तक झारखण्ड की समरगाथा में लिखते हैं कि झारखण्ड के लोगों ने अंग्रेजों से लगातार 150 वर्षों से भी अधिक समय तक लम्बी लड़ाई लड़ी थी. उन्हें उम्मीद थी कि आजादी के बाद देश स्वतन्त्रता सेनानियों की तरह उनका सम्मान करेगा लेकिन आज़ादी के बाद जिस तरह वास्तविक स्वतन्त्रता सेनानियों को निराशा हुई थी ठीक उसी तरह झारखण्ड के लोगों के विश्वास को भी धक्का लगा. राज्य पुनर्गठन आयोग ने अपनी बड़ी रिपोर्ट के मूल में तीन छोटी छोटी बातें कही थी। क) आदिवासी इस क्षेत्र के अल्पसंख्यक हैं ख) इनकी कोई सम्पर्क भाषा नहीं है ग) शेष बिहार की अर्थव्यवस्था डगमगा जायगी. अतः बिहार का बंटवारा उचित नहीं है. डॉ आंबेडकर ने अपनी पुस्तक थॉट्स ऑन लिंगुइस्टिक स्टेट्स में 23 दिसम्बर 1955 को लिखा कि भाषाई प्रान्तों का गठन आज एक ज्वलन्त समस्या है. मुझे खेद है कि अपनी बीमारी की वजह से मैं इस सवाल पर संसद में हुई बहस में शिरकत नहीं कर सका. राज्य पुनर्गठन पर डॉ अंबेडकर ने 23 अप्रैल 1953 को टाइम्स ऑफ इंडिया में नीड फॉर चेक्स एंड बैलेंस शीर्षक से एक लेख लिखा. वह लिखते हैं कि भाषाई प्रांतों के गठन की इस सोच के बहुत पहले ही गांधी जी की छत्रछाया में कांग्रेस ने सन 1920 में भाषाई प्रांतों के गठन के लिए एक मसौदा तैयार किया था. डॉ राजेंद्र प्रसाद ने भी भाषागत आधार पर प्रांतों के गठन एवं जांच पड़ताल के लिए उत्तर प्रदेश के वकील श्रीधर के नेतृत्व में एक समिति का गठन किया था. धर समिति ने यह कहा था कि यदि महाराष्ट्र को भाषायी आधार पर राज्य बनाया गया तो मुंबई को कतई उसमें शामिल नहीं किया जाना चाहिए लेकिन मद्रास शहर को तमिल के साथ ही रहने देना चाहिए. संसद में हुई बहस बाबासाहेब डॉ भीमराव अंबेडकर द्वारा सन 1953 में लिखा गया लेख जनता को उस समय की वस्तुस्थिति से अवगत कराने के लिए लिखा गया था, क्योंकि उस समय कई राज्यों के गठन और पुनर्गठन के लिए आंदोलन चल रहे थे. जयपाल सिंह के नेतृत्व में झारखण्ड आंदोलन भी अपने चरम पर था. थॉट्स ऑन लिंगुइस्टिक स्टेट्स में डॉ अंबेडकर ने अपनी पुस्तक में बगैर प्रस्तावित राज्य के नाम का उल्लेख किए ही लिखा है कि बिहार के बारे में मेरा प्रस्ताव इसे दो राज्यों में

बांटने का है. दोनों राज्यों में प्रत्येक की आबादी डेढ़ करोड़ से ज्यादा है. यह एक राज्य के शासन के लिए कम नहीं है. बिहार के दोनों राज्य जहां अपनी राजधानी रख सकते हैं, पटना और रांची. ये दोनों जगहें राज्यों के मध्य में पड़ती है. संयोग से आज बिहार के हिस्से झारखंड की जो सीमा है वह डॉ अंबेडकर द्वारा सुझाई गई रेखा है, जिसकी उस समय अनदेखी कर दी गई थी. डॉ अंबेडकर के सुझाव सफल होने में 47 साल लग गए. झारखंड आंदोलन के बुद्धिजीवी और रांची विवि में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग खुलवाने में अहम भूमिका निभाने वाले वीर भारत तलवार अपनी पुस्तक झारखंड आंदोलन के दस्तावेज की भूमिका में 25 जुलाई 2017 को लिखते हैं कि उम्मीद थी कि झारखंड अलग राज्य बन जाने से यहां की समस्याएं दूर होती जाएंगी, जनता का जीवन खुशहाल होता जाएगा लेकिन यह उम्मीद पूरी होती दिखाई नहीं देती. उल्टे आम जनता का जीवन बदहाल होता जा रहा है. सिर्फ मुट्ठीभर लोगों ने जो सांसद, विधायक, मंत्री बने, सरकारी अधिकारी बने या जिन्हें सरकारी ठेके मिले ऐसे मुट्ठीभर लोगों ने राज्य का जमकर फायदा उठाया और खूब कमाई की है. लेकिन आम जनता का हाल पहले से भी बुरा होता गया है. जिन समस्याओं के हल के लिए झारखंड आंदोलन किया गया था उनमे से एक का भी हल नहीं निकला. देशी-विदेशी पूंजीपतियों द्वारा झारखंड की खनिज संपदा की लूट पहले की तरह ही जारी है, बल्कि और बढ़ गई है. विकास के नाम पर बनने वाली परियोजनाओं और उद्योगों के चलते आदिवासियों का विस्थापन पहले की तरह ही जारी है. आजीविका की खोज में गांव छोड़ कर बाहर जाने वाले आदिवासी पुरूष स्त्रियों का पलायन पहले की तरह ही जारी है. काम दिलाने के नाम पर युवा लड़के लड़कियों को फुसलाकर दलालों के माध्यम से बाहर ले जाना पहले की तरह ही जारी है. राज्य बनने के सोलह साल बाद भी मूल निवासियों की एक भी बुनियादी समस्या का हल नहीं किया गया. इसका मुख्य वजह है सरकार की जनविरोधी नीतियां और राजनैतिक नेतृत्व का दलाल हो जाना. वरिष्ठ पत्रकार बलबीर दत्त अपनी पुस्तक "कहानी झारखंड आंदोलन की" में लिखते हैं कि झारखंड आंदोलन के कई नेता यह चाहते ही नहीं थे कि इस आंदोलन का अंत हो. वे इसे चलाए रखना चाहते थे. इसमें उनका निहित स्वार्थ भी था. इसमें उनके कई निजी हित सिद्ध होते थे. एक खास दौर में कुछ लोगों के लिए झारखंड आंदोलन यहां का सबसे बड़ा उद्योग बन गया था.

आगरा अधिवेशन में बनी थी संघर्ष की रणनीति 1988 में भारतीय जनता पार्टी के तीन दिनी चौथे महाधिवेशन में वनांचल की मांग के पक्ष में अपनी राय जाहिर की गई। इंदर सिंह नामधारी ने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष का नया नया प्रभार लिया था। इस महाधिवेशन बाद बिहार प्रदेश कार्य समिति की बैठक जो रांची में 30 अप्रैल 1988 को हुई थी इसमे यह निर्णय लिया गया कि छोटानागपुर और संताल परगना को मिला कर वनांचल राज्य की मांग पर संघर्ष किया जायेगा।

1. *******************

**सन्दर्भ:-**


**1.**कहानी झारखण्ड आंदोलन की बलबीर दत्त
2.झारखण्ड की समरगाथा शैलेन्द्र महतो
3.झारखण्ड आंदोलन के दस्तावेज वीर भारत तलवार
4.झारखण्ड इंसाइक्लोपीडिया रणेंद्र व सुधीर पाल
5.प्रभात खबर अखबार
6.रांची एक्सप्रेस अखबार


# दो हज़ार दस के बाद की महिला लेखकों की कहानियों में आत्म निर्भर नारी चित्रण


**अंजना .एम्**
शोधार्थी
हिंदी विभाग,केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल

**डॉ.आर.जयचंद्रन**
आचार्य
हिंदी विभाग केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनंतपुरम,केरल



**सारांश** :हिंदी रचना क्षेत्र में पुरुष लेखन की अपेक्षा स्त्री लेखन ज़्यादा जागरूक रही है। स्त्री अपनी मनोभावों और स्थितियों को मुक्त रूप से कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। नारी अस्मिता, स्वतंत्रता, सामाजिकता आदि विभिन्न विषयों पर आज की लेखिकाओं ने तूलिका चलायी है। गीताश्री, प्रज्ञा, उर्मिला शिरीष, सुधा अरोड़ा, वंदना राग आदि लेखिकाओं के नाम इस संदर्भ में बड़ी सम्मान के साथ लिया जा सकता है।नारी हर युग में साहित्य सृजन की प्रेरणा बनी है। समकालीन महिला लेखन में विशेषकर दो हज़ार दस के बाद की कहानियों में नारी जीवन के विविध आयामों को पूरी ईमानदारी के साथ चित्रित करने के साथ-साथ नारी की वर्तमान जीवन में क्या अहमियत है उसे भी बखूबी रेखांकित किया है स्त्री-लेखन नारी-शोषण के विरुद्ध बदलाव और क्रांति के साथ स्त्री स्वतन्त्रता पर समकालीन हिंदी कहानी विधा में सशक्त हस्तक्षेप भी करता है। डॉ. सुरेश धींगड़ा के शब्द में - "समाज में परिवर्तन अवश्यम्भावी होता है। आधुनिक संसार में समाजगत सामान्य परिवर्तन वैयक्तिक अनुभव और समाज के क्रियाशील पक्षों के व्यापक क्षेत्र को प्रभावित करते हैं। इसलिए नहीं कि समाज में एक्य के सूत्र अधिक दृढ़ होते हैं, वरन् इसलिए कि परिवर्तन की सामान्य स्थिति अथवा सम्भावनाओं से जीवन का कोई पक्ष अछूता नहीं है। पिछली कई दशाब्दियों में भारतीय समाज में कतिपय सम्भावनाओं की पूर्ति हुई है, यद्यपि उसमें पर्याप्त रिक्त स्थान शेष है...........परिवर्तन का एक और महत्वपूर्ण पक्ष है- स्त्री की स्थिति में परिवर्तन।"[1]


महिला लेखन में खासकर दो हज़ार दस के बाद की महिला लेखेकों की कहानियों में स्वतंत्र नारी का चित्रांकन ज़्यादा मिलता है। प्रज्ञा,गीता श्री, उर्मिला शिरीष, वंदना राग,सुधा अरोड़ा, नीलाक्षी सिंह आदि महिला लेखेकों की कहानियों में नारी की समस्याओं को तो उजागर किया है लेकिन ज़्यादातर कहानियों में रूढ़िमुक्त नारी की बहुविधीय पक्षों पर अपनी सूक्ष्म अंतर्दृष्टि डाली है। बदलते परिस्थितियों की वजह से नारियों में अपने हक के प्रति जागरूकता दिखाई है। युग युगों से नारी पीड़ित रही है। लेकिन आज कल स्थितियों में बहुत बदलाव आया है । आज नारी उड़ सकती है, अपने पैरों पर खड़ी हो सकती है, अपना जीवन खुद जीती है। हालांकि आज भी कुछ जगहों में नारी पूर्णतया स्वतंत्र नहीं हुई है।

प्रज्ञा की सन् 2021 में प्रकाशित कहानी संग्रह 'रज्जो मिस्त्री' की 'मौसम की करवट' कहानी में संजू नामक लड़की के